प्रो॰ देवराज
अध्यक्ष , हिंदी विभाग

मणिपुर विश्वविद्यालय
कांचिपुर, इम्फाल - 795003
मणिपुर ।

प्रमाण - पत्र

प्रमाणित किया जाता है कि सुश्री वाइ. चनु इबेहाइबी ने मेरे निर्देशन में *"समकालीन चेतना के परिप्रेक्ष्य में सर्वेश्वरदयाल सक्सेना एवं श्रीबीरेन के काव्य का तुलनात्मक अध्ययन"* विषय पर पी-एच. डी. उपाधि हेतु शोध-कार्य किया है । इन्होंने मणिपुर विश्वविद्यालय द्वारा निर्धारित अनुसंधान नियमों का पालन किया है । यह शोध-कार्य पूरे या आंशिक रूप में किसी अन्य विश्वविद्यालय या संस्थान की किसी उपाधि हेतु प्रस्तुत नहीं किया गया है और न यह कहीं प्रकाशित है।

यह शोध-प्रबंध पी-एच. डी. उपाधि हेतु मूल्यांकन के लिए प्रस्तुत किये जाने योग्य है।

देवराज
25/6/09
(देवराज)

प्राक्कथन

"समकालीन चेतना के परिप्रेक्ष्य में सर्वेश्वर और श्रीबीरेन के काव्य का तुलनात्मक अध्ययन" शीर्षक प्रस्तुत शोध-कार्य हिंदी और मणिपुरी भाषाओं की कविता को नई दृष्टि से समझने का एक छोटा सा प्रयास कहा जा सकता है । वर्तमान में भारतीय भाषाओं के विकास में हिंदी की भूमिका की आवश्यक्ता को मानने जाने लगा है । शोध की दृष्टि से साहित्य के समर्थ विकसित करने के लिए तुल्नात्मक अध्ययन की जो परिपाटी विकसित हो चुकी है , उसको समग्रता प्रदान करने का काम हिंदी भाषा कर रही है । इसी के साथ भारतीय भाषाओं के काव्य-साहित्य का मूल्यांकन हिंदी-कविता के परिप्रेक्ष्य में किया जाना और भी महत्वपूर्ण माना जा सकता है । इसका कारण यह है कि हिंदी अब केवल एक सामान्य भाषा न रहकर विश्व भाषा बनने की दिशा में अग्रसर हो रही है तथा विश्व की विभिन्न भाषाओं के साहित्य के सम्पर्क में आकर द्रुत गति से उन्नति कर रही है । एक ओर समीक्षा की नई-नई पद्धतियाँ व्यवहार में आ रही हैं , तो दूसरी ओर तुलनात्मक परिपाटी का प्रयोग बढ़. रहा है ।

इस नये विकासात्मक परिवर्तन का उपयोग हिंदीतर भाषी क्षेत्रों में अपेक्षाकृत्त अधिक दिखाई दे रहा है । इसके पीछे हिंदीतर भाषी क्षेत्रों में हिंदी के अध्येताओं का बहु-भाषी होना है । मातृभाषा के अतिरिक्त हिंदी और अंग्रेजी का ज्ञान प्राप्त करना उनकी आवश्यकता में शामिल हो गया है । इससे तुलनात्मक अध्ययन की भूमिका अपने आप ही निर्मित हो जाती है ।

प्रस्तुत शोध कार्य के विषय के चयन में यह पूरी पृष्ठभूमि रही है । मेरी मातृभाषा मणिपुरी है और मैंने उच्च शिक्षा हिंदी में प्राप्त की है । उच्च अध्ययन करते समय मुझे समकालीन हिंदी कविता ने अपनी ओर आकृष्ट किया । उससे परिचित होने के पश्चात मैंने मणिपुरी भाषा की समकालीन कविता का अध्ययन किया । इस क्रम में मुझे मणिपुरी भाषा के जिन समकालीन कवियों ने आकृष्ट

किया , उनमें श्रीबीरेन सबसे महत्वपूण हैं । हिंदी में मुझे सर्वेश्वरदयान सक्सेना की कविताएँ अच्छी लगी थीं। इस प्रकार जब मेरे मन में समकालीन कविता को केन्द्र में रखकर तुलनात्मक शोध-कार्य करने का विचार आया तो प्रस्तुत विषय बिना किसी बाधा के तय कर लिया गया ।

यह सम्पूर्ण शोध-कार्य सात अध्यायों में विभक्त है । उपलब्धियाँ एवं निष्कर्ष स्वतंत्र रूप से आठवें अध्याय में प्रस्तुत किए गए हैं ।

पहले अध्याय में सर्वेश्वर और श्रीबीरेन के काव्य के तुलनात्मक अध्ययन की कसौटी का निर्माण किया गया है । शोध की आधार भूमि बनाने के लिए यह आवश्यक था कि समकालीन चेतना का सैद्धांतिक विश्लेषण और मूल्यपरक अध्ययन किया जाए , अतः इस अध्याय में समकालीन चेतना की अवधारणा , उसका पारिभाषिक रूप , मूल्य-दृष्टि आदि बिंदुओं को अध्ययन का विषय बनाया गया है ।

हिंदी अध्येताओं को सर्वेश्वर एवं उनके साहित्य की पूरी जानकारी है , किंतु वे मणिपुरी कवि श्रीबीरेन के विषय में पूरी तरह अनभिज्ञ हैं , अतः आवश्यक था कि हिंदी अध्येयाताओं के लाभार्थ श्रीबीरेन के जीवन , व्यक्तित्व , विचार-धारा आदि का विशिष्ट परिचय दिया जाए । तुलनात्माक अध्ययन करते समय यदि एक कवि के विषय में जानकारी दी जाती है , तो दूसरे कवि के संबंध में भी वैसा करना आवश्यक प्रतीत होता है , अतः दूसरे अध्याय में श्रीबीरेन और सर्वेश्वर, दोनों के जीवन एवं साहित्य का परिचायात्मक अध्ययन प्रस्तुत किया गया है । इसी के साथ दोनों कवियों ने सकालीन चेतना को किस रूप में ग्रहण किया , इस का विश्लेषणात्मक अध्ययन किया गया है ।

समकालीन चेतना के परिप्रेक्ष्य में सर्वेश्वर ने समग्र भारतीय समाज को ध्यान में रखा है, जबकि श्रीबीरेन की रचनाओं के केंद्र में मुख्यतः मणिपुरी समाज है । इसके बावजूद सामाजिक मूल्य-बोध संबंधी दृष्टिकोण इन दोनों कवियों का वैशिष्ट्य प्रदर्शित करता है । दोनों ही कवि

समाज को समकालीन चेतना के प्रकाश में देखते हैं । इसमें कटु यथार्थ और सौंदर्य बोध , दोनों की महत्वपूर्ण भागीदारी है । सामाजिक मूल्य-बोध के अन्तर्गत समाज , धर्म , संस्कृति व परंपरा संबंधी दोनों कवियों के दृष्टिकोणों को तीसरे अध्याय में प्रस्तुत किया गया है । समकालीन जीवन-दृष्टि का एक महत्वपूर्ण पक्ष है , आर्थिक चेतना । आज भारत ही नहीं , बल्कि पूरे विश्व की अर्थ-व्यवस्था पूँजीवाद के शिकंजे में है । पूँजीवाद ने मुख्य आक्रमण मध्य भारतीय अर्थ व्यवस्था पर किया । इसका आक्रमण उस क्षेत्र पर 20वीं शताब्दी के प्रारंभिक दशकों में हो गया था। साठोत्तरी काल में उसके भीषण परिणाम खुलकर सामने आने लगे । मणिपुरी अर्थ व्यवस्था को पूँजीवादी प्रभावों ने सन् 1950 के बाद ही स्पर्श करना शुरू किया , किन्तु जब एक बार पूँजीवाद ने रास्ता देख लिया तो उसने तीव्र गति से पूरी अर्थ व्यवस्था को अपने कब्जे में ले लिया । समीक्ष्य दोनों ही कवि पूँजीवाद और आम आदमी की आर्थिक समस्याओं से जुड़े हुए हैं । दोनों कवियों के काव्य में इन पक्षों का विश्लेषण चौथे अध्याय में किया गया है ।

समकालीन राजनैतिक प्रभावों की दृष्टि से मध्य भारत और मणिपुर एक ही समय एक ही जैसे प्रभावों से ग्रस्त हुए । दोनों क्षेत्रों ने ही अवसरवादी , कुर्सीधर्मी , चुनावधर्मी , भ्रष्टाचार पर आधारित और दल-बदल को सफलता का आधार मानने वाली राजनैतिक प्रवृत्ति का साक्षात्कार समान रूप से किया। सर्वेश्वर और श्रीबीरेन के काव्य में यह समकालीन राजनैतिक सच्चाई नग्न रूप में उपस्थित हुई ह। पाँचवें अध्याय में इसीसे जुड़े विविध पक्षों का अध्ययन प्रस्तुत किया गया है।

समकालीन चेतना से जुड़े सर्वेश्वर और श्रीबीरेन ने बौद्धिक वर्ग की मानसिकता को भी प्रस्तुत किया है । छठे अध्याय में यह विश्लेषित किया गया है कि समकालीन परिस्थितियों और जन समस्याओं के संदर्भ में बौद्धिक जगत की भूमिका कितनी सार्थक है तथा दोनों समीक्ष्य कवि उस भूमिका को किस दृष्टि से देखते हैं ?

समकालीन चेतना के केन्द्र में व्यक्ति विशेष न होकर आम आदमी है । यही कारण है कि समकालीन कविता में अभिजात व्यक्ति मूल्यों के लिए या फिर परंपरागत व्यक्ति चेतना के लिए अधिक आकर्षण नहीं है । समकालीन कविता दबे-कुचले आम आदमियों की मनोदशाओं को महत्व देती है , किन्तु यह भी सत्य है कि वैयक्तिक भावनाओं और मनोदशाओं की इस कविता ने पूरी तरह अनदेखी नहीं की है । सर्वेश्वर और श्रीबीरेन के काव्य साहित्य में वैयक्तिक मनोदशाओं और वैयक्तिक जीवन-दृष्टि की जो स्थिति है , उसका अध्ययन सातवें अध्याय में किया गया है ।

समकालीन चेतना के परिप्रेक्ष्य में सर्वेश्वर और श्रीबीरेन के काव्य के तुलनात्मक अध्ययन से प्राप्त उपलब्धियों को आठवें अध्याय में शोध -निष्कर्ष के रूप में रखा गया है ।

श्रीबीरेन ने अपना बहुमूल्य समय देकर , अपने साथ बैठ कर बातचीत करने का जो मौका दिया , वह मेरे सौभाग्य की बात है । इसके लिए मैं सदैव उनकी ऋणी हूँ । उनके साथ की गयी लम्बी बातचीत में उन्होंने अपने जीवनानुभव तथा काव्य-यात्रा संबंधी बहुत सारी बहुमूल्य जानकारियाँ दीं , वे मेरे शोध- कार्य को संपन्न करने में बहुत सहायक सिद्ध हुई है । उनके साथ की गयी बातचीत को शोध-प्रबंध में परिशिष्ट के अंतर्गत प्रस्तुत किया गया है ।

प्रस्तुत शोध-प्रबंध डॉ. देवराज , अध्यक्ष , हिंदी विभाग , मणिपुर विश्वविद्यालय , कांचीपुर के सुयोग्य निर्देशन में संपन्न हुआ है । आपकी अनुकंपा एवं स्नेहपूर्ण प्रोत्साहन के बिना यह कार्य संपन्न हो ही नहीं सकता था ।

मैं कृतज्ञता सहित आभारी हूँ , गुरूवर डॉ. इबोहल सिंह काङ्जम , प्रोफेसर , हिंदी विभाग , मणिपुर विश्वविद्यालय , कांचीपुर की जिन्होंने श्रीबीरेन के काव्य-संग्रह 'मपाल नाइदबसिदा ऐ' के हिंदी-अनुवाद की पाण्डु लिपि देकर मेरे शोध-कार्य के संपन्न होने में बहुत बड़ी सहायता की । प्रारंभ से ही मुझे उनकी स्नेहपूर्ण शुभकामनाएँ , बहुमूल्य सुझाव एवं असीम प्रेरणा मिलती रही है ।

मैं हिंदी विभाग , मणिपुर विश्वविद्यालय , कांचीपुर की प्रो. डॉ. सुबदनी देवी और हिंदी विभाग , मणिपुर विश्वविद्यालय , कांचीपुर की प्रवक्ता डॉ. विजयालक्ष्मी के प्रति हृदय से आभार प्रकट करती हूँ , जिनका सहयोग मुझे समय-समय पर मिलता रहा है।

मैं डॉ. कंचन शर्मा की सदैव ऋणी हूँ , जिन्होंने विषय सामग्री उपलब्ध कराने में बहुत बड़ी मदद की और इस शोध-प्रबन्ध को पूर्ण करने के लिए मुझे उत्साहित किया ।

मैं हिंदी विभाग, मणिपुर विश्वविद्यालय , कांचीपुर के लिपिक ब्रोजेन भैया के प्रति अपनी कृतज्ञता व्यक्त करती हूँ , जिन्होंने कार्यालय संबंधी कार्यों में मदद की है ।

मैं अपनी प्रिय दीदी डॉ.इबेयाइमा की सदैव ऋणी हूँ , जिन्होंने इस शोध-कार्य केसम्पन्न होने में प्रारंभ से अंत तक मेरा साथ दिया और उत्साहित किया । शोध संबंधी समस्याओं के समाधान में उन्होंने मेरी सहायता की है । श्रीबीरेन की कविताओं को हिंदी भाषा में लाने का अधिकतम श्रेय उन्हीं को जाता है । उन्होंने अपना व्यस्त समय में से मेरे लिए समय निकालकर टंकण-कार्य करने का दायित्व भी अपने कंधे पर उठाया । मैं अपने प्रिय जीजाजी डॉ. मोनोरंजन के प्रति भी हृदय से आभार प्रकट करती हूँ , जिन्होंने न केवल टंकण-कार्य में सहायता की , बल्की अपनी सद्भावनाओं एवं उत्साहपूर्ण सहयोग से मुझे कृतज्ञ किया है । दीदी और जीजाजी के स्नेहपूर्ण प्रोत्साहन के बिना इस शोध-कार्य का संपन्न होना असंभव था। मेरा हृदय सदैव उनका आभारी रहेगा ।

अपनी पूजनीया माताजी, छोटे भाई एवं छोटी भाभी के प्रति कृतज्ञता प्रकट करती हूँ , जिन्होंने मेरी प्रगति को अपनी प्रगति मानकर मुझे उत्साहित किया ।

इबेहाइबी

वाइखोम चनु इबेहाइबी